अध्याय42

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा. प्रार्थना के साथ अपने समूह, शिष्यों का निर्माण करने वाले इस पाठयक्रम को परमेश्वर के हाथों में सौपें।

2.	**बाँटना** (20मिनट) *[शान्त समय]* **नहेम्याह 4,8,9,10**

आगे बढ़कर (या अपने नोट्स में से **पाढ़ें**) संक्षेप में ***बताएं*** कि आपने एकान्त समय के दौरान बाइबल के निर्धारित अनुच्छेद (नहेम्याह 4,8,9,10)से क्या सीखा।

अपने अनुभव का वर्णन करने वाले जन की सुने, उसे गम्भीरता से लें तथा उसे स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (20मिनट) *[शिष्यता]* **सेवा: मरकुस10:45**

क-ध्यान करना

मरकुस 10:42-45 **पढ़ें।** "तो यीशु ने उनको पास बुलाकर उनसे कहा," तुम जानते हो कि जो अन्य जातियों के हाकिम समझे जाते हैं, वे उन पर प्रभुता करते हैं; और उनमें जो बड़े हैं, उन पर अधिकार जताते हैं। पर तुम में ऐसा नहीं है,वरन जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा सेवक बने; और जो कोई तुम में प्रधान होना होना चाहे,वह सब का दास बने। क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, पर इसलिए कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौतो के लिए अपना प्राण दे"

निम्नलिखित याद करने वाले पद को वचन को श्वेत/श्याम पट लिखें।

सेवा मरकुस 10: 45
क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, पर इसलिए कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपना प्राण दे । मरकुस 10:45

अपने कार्ड के पीछे बाइबल के पर लिखें:

1.अन्यजातियों के हाकिम लोगों पर प्रभुता करते हैं।

संसार से बहुत से अगुवे आज किस प्रकार से शासन करते हैं? यीशु ने कहा कि संसार में बहुत से अगुवे अगुवा होने का दावा करते हैं लोग भी उन्हें अगुवा मानते हैं परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में वे अगवे नहीं हैं। उन्हें अगुवा होना चाहिए था परन्तु वे सच्चे अगुवे बनने में असफल हो जाते हैं। यीशु मसीह इस बात को थोड़ा व्यगांत्मक ढंग से कहते हैं। यदि ये अगुवे वास्तव में अगुवे होते तो उनकी जीवन शैली बिल्कुल भिन्न होती।

संसार के अगुवे अपनी सारी ताकत ऊँचाई तक पहुंचने में लगा देते हैं, और जब वे उस ऊंचाई तक पहुँच जाते हैं, तो वे चाहते हैं कि सभी लोग उनके उस रुतबे का सम्मान करें। वे केवल अपने बारे में ही सोचते हैं, लेकिन जिन लोगों की वे अगुवाई करते हैं उनके बारे में नहीं सोचते। वे अपने अधिकार के नीचे आने वाले लोगों पर कठिन नियमों को लागू करते हैं। वे अपने अनुयायियों या विश्वासियों के जीवन के हर क्षेत्र पर अपना अधिकार समझते हैं। वे लोगों स जबजस्ती उन बातों पर विचार करना,विश्वास करना और बुलवाना चाहते हैं जो वह जो उन्हें अच्छे लगते हैं। वे अधिकतर ऐसा व्यवहार करते हैं मानों वे खुद परमेश्वर हैं और उनसे बड़ा अधिकारी कोई और है ही नहीं। या वे इस प्रकार का दावा करते हैं कि परमेश्वर ने उन्हें यह अधिकार दिया है इसलिए यदि लोग उनकी आज्ञा का पालन नहीं करते तो वे परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं करते। इस प्रकार की अगुवाई को यीशु मसीह प्रभुता करना कहते हैं।

2. यीशु के चेलों को लोगों का सेवक होना चाहिए।

मसीही अगुवों को किस प्रकार से अगुवाई करनी चाहिए? यीशु मसीह ने स्पष्ट कहा है कि मसीही अगुवों को सांसारिक अगुवों के समान अगुवाई नहीं करनी चाहिए! उन्हें कहा 'तुम्हारे बीच में ऐसा नहीं होना चाहिए'। यीशु ने शिक्षा दी कि जो कोई तुम में से महान होना चाहता ह वह सबका दास बने और जो कोई तुममे से पहला होना चाहता है वह सबका सेवक बने। यीशु ने सिखाया कि परमेश्वर के राज्य में सेवा के द्वारा ही महानता प्राप्त होती है। महानता प्राप्त करने का यह सूत्र संसार में चालित सूत्र का बिल्कुल विपरीत है। यीशु ने सिखाया कि नि:स्वार्थ भावना के साथ देने के द्वारा कोई व्यक्ति महान बनता है। महानता दूसरों के लिए अपने जीवन को उण्डेल देने में है,न कि दूसरों को अपने लक्ष्यों को पूरा करने के लिए इस्तेमाल करने में।

गुलाम शब्द का अर्थ बहुत नकारात्मक है। एक गुलाम के पास कोई आज़ादी नहीं होती,उसे कई बार नापसन्द आने वाले काम भी करने पड़ते हैं, उसके साथ बड़ी क्रूरता के साथ बर्ताव किया जाता है,इत्यादि। इस अनुच्छेद में, गुलाम का अर्थ नौकर के सामान्तर है इसलिए इस नाम को धारण करने वाला व्यक्ति नम्र होना चाहिए। इसका अर्थ है कि मसीही अगुवा आज़ादी व स्वेच्छा से सेवा करता है। यीशु मसीह का अर्थ यह नहीं था कि मसीही अगुवों के साथ क्रूरता व अनादर के साथ व्यवहार करना चाहिए। जबकि किसी पिरामिड के शिखर पर खड़ा एक व्यक्ति इस संसार की अगवाई का प्रतीक है, वहीं पिरामिड की सतह या जड़ पर खड़ा व्यक्ति मसीही अगुवाई को प्रदर्शित करता है। मसीही अगुवे पिरामिड के तल पर खड़े होकर लोगों की सेवा करते हैं। इसलिए मसीहियत में सबसे महान बात प्रेम के साथ लोगों के सेवा करना है।

3. यीशु मसीह का सच्चा उदारहण।

यीशु ने सेवा करने के द्वारा अगुवाई की । यीशु मसीह राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है(प्रकाशितवाक्य 19:16) और फिर भी उसके प्रथम आगमन के वक्त, वह लोगों से अपनी सेवा टहल करवाने के लिए नहीं, वरन उनकी सेवा करने क लिए आया! यीशु ने लोगों की सेवा करके अगुवाई की। उसने अपने जीवन को लोगों के बदल फिरौति के दाम के रूप में दे दिया।

फिरौति की रकम।

- फिरौति की रकत क्या है? फिरौति वह रकम है जो गुलामों को आज़ाद करवाने के लिए अदा की जाती थी। यीशु ने फिरौति की रकम के रूप में जा दाम चुकाया था वह खुद उसका प्राण था। यह हमारे बदले में किया गया प्रायश्चित था। केवल वह ही बलिदान था जिस परमेश्वर ने स्वीकार किया।
- यीशु ने किस यह फिरौति की रकम दी? उसने यह रकम शैतान को नहीं दी, भले ही लोग शैतान के बन्धन में थे। उसने यह फिरौति परमेश्वर को दी, ताकि बहुत से लोगों के पापों के कारण उत्पन्न हुए परमेश्वर के क्रोध से उनको बचाया जा सके। दूसरों शब्दों में कहा जाए तो: एकमात्र परमेश्वर, जिसने मनुष्य का रूप धारण किया, जिसने इस जगत और यीशु मसीह के इतिहास में प्रवेश किया, और हमारे पापों के लिए निर्धारित दण्ड को अपने ऊपर ले लिया।
- इस छुड़ौति से संसार में किसको लाभ हुआ? हालांकि उसकी फिरौति संसार के सारे लोगों के लिए काफी थी, लेकिन संसार के सारे लोगों को उसकी फिरौति से लाभ नहीं पहुंचता। उसकी फिरौति संसार के सभी लोगों के लिए फायदेमन्द नहीं है। उसने जगत के सारे लोगों के लिए नहीं वरन बहुत से लोगों के लिए प्राणों को दिया। वे बहुत से लोग कौन हैं? यशायाह 53:8 में लिखा है, " *बहुत से लोगों के अपराधों के कारण* उस पर मार पड़ी"। मत्ती 1:21 में लिखा है " तुम उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों का उनके *पापों से उद्धार करेगा।*" यूहन्ना 6:39 में यीशु ने कहा, " मैं उन में से मैं कुछ भी न खोऊँ, *जिन्हें परमेश्वर ने मुझे दिया है* "। प्रेरितों के काम में लिखा है, " यीशु ने *कलीसिया को अपने लहू से मोल लिया है।*" रोमियों 8:32-33 में लिखा है, "उसने यीशु का हम सब के लिए दे दिया" अर्थात उनके लिए "उनके लिए जिन्हें परमेश्वर ने धर्मी ठहराया है।" यद्यपि यीशु ने अपना हर एक जन के लिए नहीं दिया, लेकिन यह भी सत्य है कि उसने ऐसा कुछ ही लोगों के लिए नहीं वरन बहुत से लोगों के लिए किया है। प्रकाशितवाक्य 7:9 में हम पढ़ते हैं कि यूहन्ना एक *बड़ी भीड़ को देखता है जिसे कोई गिन नहीं सकता, जिसमें हर जाति, हर भाषा और हर देश के लोग* यीशु व परमेश्वर के सिंहासन के सामने खड़े हुए थे।

4. बाइबल से सेवा।

मैनुएल 12 के 14 परिशिष्ट में मसीही सेवा के सन्दर्भ में पाये जाने वाले विश्वासयोग्य व अविश्वासयोग्य दासों के दृष्टान्त के अध्ययन को देखें।

ख. याद करना व अवलोकन करना

1) एक खाली कार्ड या अपनी कॉपी के एक पेपर पर बाइबल की आयत को ***लिखें।***
2) सही तरीके से बाइबल के वचनों को ***याद करें।*** सेवा: मरकुस 10:45
3) ***पुन: अवलोकन!*** दो दो के जोड़े में बंटकर, एक दूसरे के द्वारा कि गयी पिछली आयत का मूल्यांकन करें।

4	**बाइबल अध्ययन** (70मिनट) *[संसार में जीवन बिताना]* **संसार में आत्मिक युद्ध : इफिसियों 6:10-20**

बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों का इस्तेमाल करते हुए इफिसियों 6:10-20 तक का एक साथ मिलकर अध्ययन करें।

कदम 1. पढ़ें। परमेश्वर का वचन

पढ़ें। आइये हम मिलकर इफिसियों 6:10-20 को एक साथ पढ़ें।
आइये हम बारी-बारी से निर्धारित सभी वचनों को पढं।

कदम 2 खोजें निरीक्षण

ध्यान दें। **इस अनुच्छेद में कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?**
या इस अनुच्छेद के किस सत्य ने आपके हृदय या मन को छुआ?
लेखा रखें। एक या दो बातों की गहन पड़ताल करें, जो आपको समझ आयी हों। उन पर सोच विचार करें तथा अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।
बांटे। (समूह के सदस्यों द्वारा दो मिनट विचार करने तथा उन विचारों को लिखने के बाद, उन विचारों को बारी बारी आपस में बांटें) आइयें हम आपस में बारी बारी बांटे कि हमें क्या प्राप्त हुआ है।
(लोगों द्वारा खोजी गयी बातों को बांटने के कुछ उदाहरण निम्नलिखित है। याद रखें के प्रत्येक लघु समूह के लोग अलग बातों को बांट सकते हैं, यह जरूरी नहीं है कि सभी सदस्यों द्वारा बाँटे गयें विचार एक ही समान हों।

6:12

खोज 1. शतान व उसकी दुष्टात्माओं की सेना वास्तविक शत्रु है।

वह मुझे गिराने और हराने की हर सम्भव योजना बनाते हैं। कुछ ऐसे विशेष दिन हैं जिन में ये बुराईयों की शक्तियां मुझ पर आक्रमण करती है। इसलिए मैं बाइबल में से इन शैतानी शक्यिों की युक्तियों के बारे में सीखता हूँ। परमेश्वर के लोगों के हृदय और जीवन से परमेश्वर के वचन को दूर रखना उसकी एक चाल होती है(लूकार 8:12)। वह हमेशा लोगों से झूठ बोलता है(यूहन्ना 8:44)। वे लोगों के मनों को अंधा कर देता है जिससे वे सुसमाचार को समझ नहीं पाते(2 कुरिन्थियों 4:3-4)। वह लोगों को यह विश्वास दिलाने की कोशिश करता है कि बुरे काम करने के बाद भी भले चीज़ों को प्राप्त किया जा सकता है(लूका 4:6-7)। वह बाइबल को गलत तरीके से इस्तेमाल करता है(लूका 4:6)। वह झूठे व दुष्ट लोगों को चर्च में रख देता है (मत्ती 13:37-41)। वह लोग को यौन सम्बन्धी पाप करने के लिए उत्साहित करता है,खास तौर से जब वे संयम खो बैठते हैं(1कुरिन्थियों 7:5)। वह झूठे शिक्षकों के द्वारा सब लोगों के बीच में झूठी शिक्षाओं को फैलाता है। (1तीमुथियुस 4:1-3)।

6:11

खोज 2. सर्वश्रेष्ठ अनुग्रह और मानवीय जिम्मेदारियों के बीच में सम्बन्ध।

एक तरफ तो, सारे आत्मिक हथियार, जिसमें परमेश्वर के सारे हथियार शामिल हैं, परमेश्वर की ओर से मिलते हैं। परमेश्वर ने इन हथियारों को तैयार करके अपने योद्धाओं को दे दिया है। दूसरी ओर, मसीही लोगों ने इन हथियारों को धारण करके इन हथियारों का आक्रामक व रक्षात्मक दोनों तरीकों से इस्तेमाल करना चाहिए। अत: आत्मिक युद्ध में मैं एक तरफ तो पूरी रीति

से परमेश्वर व परमेश्वर के हथियारों पर निर्भर होना, वहीं दूसरी ओर युद्ध करने के लिए पूरी तरह से समर्पित होना चाहता हूँ। मैं अपनी ताकत में नहीं परन्तु परमेश्वर की शक्ति में बलवन्त होना चाहता हूँ। मैं बुराई की शक्तियों के विरूद्ध मज़बूती से खड़ा होना चाहता हूँ।

कदम 3 प्रश्न	व्याख्या

ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर किस विषय पर प्रश्न पूछना पसन्द करेंगे?

आईये हम इफिसियों 6:10-20 को पढ़कर समझने की कोशिश करते हैं और फिर भी जो बातें समझ न आएं उनके लिए प्रश्न पूछें।

लेखा ले: सबसे पहले एक स्पष्ट प्रश्न को तैयार कर लें। फिर उस प्रश्न को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

बाँटे (समूह द्वारा दो मिनट तक सोच विचार करने तथा अपने विचार लिखने के पश्चात, प्रत्येक सदस्य अपने प्रश्न को अन्य सदस्यों के साथ बांटे)

चर्चा करें: (इसके पश्चात कुछ प्रश्नों का चुनाव करने के बाद, समूह में चर्चा करने के द्वारा उन प्रश्नों का जवाब देने का प्रयास करें। (नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले सम्भावित प्रश्नों व चर्चाओं के उदहारण दिए गये हैं)

6:12

प्रश्न1. आत्मिक युद्ध क्या है(हमारा संघर्ष)?

ध्यान दें। बाइबल कहती है कि हमारी लड़ाई लोगों से नहीं, परन्तु बुरी आत्मिक शक्तियों से है। हाकिम, अधिकारी और शक्तियां अलग अलग प्रकार बुरी शक्तियां हैं जो शैतान के चगुंल में हैं और जो इस धरती पर बुरे लोगों के द्वारा कार्य करती है। बुरी शक्तियों का आवास स्वर्गीय स्थानों में है, जो जगत के ऊपर पाया जाने वाला इलाका है, लेकिन यह क्षेत्र स्वर्ग के उस क्षेत्र से नीचे है जहां पर छुड़ाये हुए लोग वास करते हैं। ये बुरी आत्माएं असल में गिराये गये स्वर्गदूत हैं। इसी कारण वर्तमान में वे जीवते परमेश्वर और उसके द्वारा लोगों में किये गये कामों का विरोध करते हैं।

आत्मिक युद्ध को शारीरिक युद्व नहीं है; इस मतलब सेनाओं, या हथियारों या लोगों को घात करने के लिए आतंक से नहीं है। आत्मिक युद्ध का पवित्र लड़ाई या जिहाद से भी नहीं है। आत्मिक युद्ध को संसारिक तरीकों से अर्थात शारीरिक हथियारों या मानवीय युक्तियों के द्वारा नहीं लड़ा ला सकता है। आत्मिक युद्ध को आत्मिक हथियारों के साथ, परमेश्वर की आत्मिक शक्ति की सहायता से ही लड़ा जा सकता है। आत्मिक युद्ध का अर्थ है कि आपको दुष्ट आत्माओं की गतिविधियों व उसकी युक्तियों से सक्रिय रूप में लड़ना है जो बुरे लोगों व बुरी प्रणाली के द्वारा इस संसार में कार्य करती है। आत्मिक युद्ध का उद्देश्य एक ओर तो शैतान के आक्रमण के बावजूद भी मज़बूती से खड़े रहना तथा दूसरी ओर उसके नियन्त्रण से भूमि और लोगों को स्वतन्त्र करवाना।

6:14

प्रश्न 2.सत्य का पटुका क्या है जिसे हमें अपनी कमर के चारों ओर बांधना है?

ध्यान दें।

शारीरिक युद्ध में, बैल्ट या कमरबन्द को रोमी सैनिकों की छोटी पतलून को मजबूती से कसने के लिए बांधा जाता था। जिसके कारण योद्ध के हाथ व पांव लड़ने के लिए स्वतन्त्र हो जाते थे। जब कभी वह युद्ध में सक्रिय नहीं होता था तो वह योद्धा अपने कवच और अपनी तलवार को अपनी कमरबन्द के साथ जोड़ देता था।

आत्मिक युद्ध में, कमरबन्द सत्य, ईमानदारी, इच्छा को दर्शाता है। मसीही योद्धा के लिए मुख्य प्रश्न यह है कि, " क्या वह वास्तव में आत्मिक युद्ध में लड़ाई लड़ना चाहता है? क्या मैं आत्मिक युद्ध को लड़ने के लिए इच्छुक हूँ?" सत्य का पटुका मसीही योद्धाओं के लड़ने की प्रेरणा व इच्छा है। सच्चाई एक सामर्थी हथियार है। सच्चाई से प्रेरित व्यक्ति किसी कपटी से ज्यादा लोगों को प्रभावित करता है। न्यायियों 7:3 में हम पढ़ते हं कि लगभग दो तिहाई सेना घर वापस लौट गयी, क्योंकि वे सच में युद्ध पर जाने के लिए तैयार नहीं थे। लेकिन गिदोन और सच में प्रेरणा पाये हुए तीन सौ लोगों ने एक बड़ी सेना को हरा दिया।

6:14

प्रश्न 3. धार्मिकता की झिलम क्या है जिसे हमें पहिनना चाहिए?

ध्यान दें।

शारीरिक लड़ाई में, झिलम या कवच एक ऐसा हथियार था जो रोमन सिपाही के गले से लेकर जांघों तक के भाग को पूरे तरह से ढांप लेता था। इसके दो भाग हुआ करते थे एक अगले हिस्से को ढांपता था और दूसरा पिछले हिस्से को(1 शमूएल 17:5,38 हथियार रूपी कवच)। जिसकी वजह से सिपाही के मुख्य अंग जैसे हृदय, फेफड़े आदि सुरक्षित रहते थे।

आत्मिक युद्ध में, झिलम का अर्थ धार्मिकता से है। यह वह धार्मिक पद नहीं है जो परमेश्वर विश्वासियों को प्रदान करता है,लेकिन यह वे धार्मिक कार्य हैं जो परमेश्वर हमें एक पवित्र व नैतिक जीवन जीने के लिए प्रदान करता है। मसीही सिपाही के लिए प्रमुख प्रश्न यह है,"क्या मैं इस प्रकार का नैतिक व धार्मिक जीवन व्यतीत कर रहा हूँ जिसके बल पर मैं किसी आत्मिक युद्ध का हिस्सा हो सकूँ? धार्मिकता की झिलम मसीही सिपाही के लड़ने की नैतिक व आत्मिक योग्यता है। नैतिक व धार्मिक जीवन व्यतीत किये बिना एक मसीह अपने उद्धार को लेकर कभी सुनिश्चित नहीं हो सकता,उसके पास शैतान के आरोपों से बचने के लिए कोई सुरक्षा नहीं होती, और उसे शक्ति व प्रार्थना के प्रभाव में अभाव महसूस होता है(याकूब 5:16)। नैतिक व धार्मिक जीवन के बिना वह आत्मिक युद्ध में अप्रभावशाली होगा। लेकिन धार्मिक आचरण आक्रमण व बचाव करने के लिए एक सामर्थी हथियार होता है। उदाहरण के लिए, 2 कुरिन्थियों 6:6-7 में हम पढ़ते हैं कि धार्मिकता के हथियार हमें दायें व बायें से होने वाले शैतान के आक्रमण का सामना करने के लिए हमें योग्य बनाते हैं। यह लड़ाई शुद्धता,धीरज,भलाई,सच्चे प्रेम व सत्य वचन के क्षेत्र में हैं। सही तरीके का जीवन सिपाही का युद्ध में मज़बूती प्रदान करता है।

6:15

प्रश्न 4. तैयारी के जूते क्या हैं जिन्हें हमारे लिए पहिनना जरूरी है?

ध्यान दें।

शारीरिक लड़ाई में,रोमी सिपाहियों को ऐसे जूते पहिनने की आदत थी जिसका तले में मोटी कीलें लगी हुई थी जिससे सिपाहियों को कठोर रोमी सड़क पर चलने में सहायता मिलती थी। जिससे सिपाही लम्बी दूरी तय करने के लिए पूरी तरह से तैयार होता था। जिसके कारण वह तेजी से और युद्ध के समय में बहुत दूर तक चल सकता था। इतिहास में हमें पता चलता है कि जूलियस सीज़र की सेना छोटे समयान्तराल में ही लम्बी दूरी तय कर लेते थे जिससे दुश्मन की सेना को बार बार सुरक्षा करने तक का समय नहीं देते थे।

आत्मिक क्षेत्र में, जूते पूरी तरह से तैयार होने को दर्शाते हैं। यह तैयारी शान्ति के सुसमाचार के द्वारा होती है। सुसमाचार परमेश्वर और मनुष्य के बीच तथा दूसरे साथी सिपाही के साथ अच्छे सम्बन्ध को स्थापित करने में सहायता करता है। यह उसे परमेश्वर के साथ शान्ति, अपने पड़ोसी के साथ शान्ति और उसके जीवन के टूटे रिश्ते में पूरी तरह से बहाली का प्रदान करता है। इस दशा में मसीही सिपाही के लिए सबसे प्रमुख प्रश्न यह होता है," क्या मैं इस आत्मिक लड़ाई में कूदने के लिए पूरी तरह से तैयार हूँ?" तैयारी के जूते मसीही सिपाही की तुरन्त काम करने की पूर्ण तैयारी को दर्शाते हैं। उदाहरण के लिए, वह धनी जिसने केवल अपनी धन सम्पत्ति को ही बढ़ाने की चिन्ता की लेकिन वह किसी दृष्टिकोण से मरने के लिए पूरी तरह तैयार नहीं था(लूका 12:13-21)। वह प्रबन्धक जिसे स्वामी ने अपनी समपत्ति पर अधिकारी ठहराया था,वह अपना समय व्यर्थ गवांते हुए खाने पीने में लग गया, और पूरी तरह से अपने स्वामी के आगमन के लिए तैयार नहीं था(मत्ती 24:45-51)।

6:16

प्रश्न 5. विश्वास की ढाल और शैतान के जलते हुए तीर क्या हैं?

ध्यान दें।

शारीरिक युद्ध में, रोमी ढाल आकार में आयताकार थी, जिस पर चमड़ा चढा हुआ करता था और जिसका आकार 120/75 का हुआ करता था। उसे शत्रुओं के तीरों से हृदय, फेफड़ों आदि शरीर के प्रमुख भागों की सुरक्षा करने के लिए तैयार किया गया था, जिन्हें छोड़े जाने से पहले डामर में डुबोकर उसमें आग लगा दी जाती थी। जब वे तीर आकर ढाल से टकराते थे तो उनकी धार खुटटल हो और आग बुझ जाती थी।

आत्मिक लड़ाई में, जलते हुए तीर शैतान व उसके बुरे लोगों द्वारा किये जाने वाले आक्रमण को दर्शाते हैं। उनके तरकश पूरी तरह से अग्निमय तीरों से अर्थात सताव व मुश्किलों से भरे होते हैं। कई तीर तो लोगों के मनों में शक,संन्देह,भय,वेदना,लालच,व्यर्थता,डाह,या अभिलाषा आदि पैदा करने के लिए होते हैं। कई बार वे अच्छे पौधों के बीच में जंगली पौधों के समान, कलीसिया में परमेश्वर के लोगों के बीच में बुरे लोगों को परेशानियां खड़ीं करने के लिए भेज देता है(मत्ती 13:25,38)। कई बार उनकी बातें विनाशक तीर के समान होती हैं जो सत्य, आत्मविश्वास और अच्छे नाम को चुगली व बदनामी के द्वारा नाश कर देते ह(यिर्मयाह 9:8)।

आत्मिक युद्ध में, ढाल विश्वास को प्रगट करती है। यह विश्वास केवल मसीही विश्वास(विषयपरक)होने की बजाय सक्रिय रूप में मसीही विश्वास होता है(व्यक्तिपरक विश्वास)। यह विश्वास भरोसा करता है कि परमेश्वर का वचन और उसके वायदे सच्चे हैं और वे कभी टलते नहीं हैं। विश्वास हमेशा आक्रामक व रक्षात्मक दोनों ही होता है। मसीही सिपाहियों के लिए प्रमुख प्रश्न यह है कि,"क्या मैं शैतान व उसके बुरे लोगों के आक्रमणों से बचाव करने के लिए व और संसार में विजय प्राप्त करने के लिए अपने विश्वास का सक्रिय रूप में इस्तेमाल कर रहा हूँ?" विश्वास की ढाल मसीही सिपाही की खुद की सुरक्षा करन की योग्यता है। उदाहरण के लिए, जब याईर की बेटी मर गयी थी,यीशु ने उसे भयभीत न होने के लिए, वरन यह विश्वास करने के लिए प्रोत्साहित किया कि उसकी बेटी पुन: जी उठेगी(लूका 8:49-50)। इसके अलावा मसीही सिपाही के लिए विश्वास की ढाल का अर्थ शैतान के इलाके में आक्रमण करके उस क्षेत्र पर विजय प्राप्त करने की योग्यता है। 1 यूहन्ना 5:4 में विश्वास वह विजय है जिसके द्वारा विश्वासियों को संसार पर जय प्राप्त होती है। कर्म के साथ विश्वास करने से, मसीही लोग अपने जीवन में पाप पर व पापमय संसार में पाप पर व शैतान पर विजय प्राप्त करते हैं।

6:17

प्रश्न 6. उद्धार का टोप क्या ह?

ध्यान दें। शारीरिक लड़ाई में, टोप लोहे, पीतल और चमड़े का बना होता था जिसका कार्य मुख्य रूप से सिर की सुरक्षा करना था।

आत्मिक युद्ध में टोप उद्धार को प्रगट करता है। 1 थिस्लुनिकियों 5:8 में यह ' उद्धार की आशा को ' भी प्रगट करता है। कठिनाईयों व सताव में, मसीही सिपाहियों को वर्तमान व भविष्यकाल दोनों के लिए उद्धार के निश्चय की आवश्यकता है। बिना इसके वह जल्द ही युद्ध में हार मान सकता है। इस बाता का ज्ञान रखना कि परमेश्वर स्वयं हमारे लिए लड़ रहा है(निर्गमन 14:14), जब हम आग से होकर गुजरेंगे तो परमेश्वर हमारे साथ होगा(यशायाह 43:2) और परमेश्वर उसे सताव और क्लेशों से बचाएगा(2 तीमुथीयुस 3:11), मसीही सिपाही को मज़बूत बनाता और लगातार लड़ने में सहायता करता है। इस बात का निश्चय कि परमेश्वर ने जो काम हम में शुरू किया है वह उसे लगातार चलायेगा और समाप्त भी करेगा, मसीही को मजबूत बनाता और लड़ाई में डटे रहने में सहायता करता है।

उद्धार एक आक्रामक हथियार भी बन सकता है। भजन 40:1-3 में हम पढ़ते हैं कि दाऊद, परमेश्वर द्वारा उसे मुश्किलों के दलदल से बचाए जाने पर एक "उद्धार का गीत" गाता है। वह गाता है कि "परमेश्वर ने मुझे एक नया गीत सिखाया है... बहुतेरे यह देखकर डरेंगे और यहोवा पर भरोसा रखेंगे। इसके अलावा दूसरों को " उद्धार के सुसमाचार" का प्रचार किया जाना और लोगों द्वारा यह देखना कि परमेश्वर का वचन कभी खाली हाथ वापस नहीं आता, वरन वह जो वह चाहे वह पूरा करता है(यशायाह 55:11),यह सबसे बेहतर आक्रामक हथियार है। मसीही सिपाही के लिए सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि," क्या मैं अपने मन व दिमाग को शैताने के आक्रमणों से बचा रहा हूँ, जिससे मुझमें लगातार यह निश्चय बना रहे कि मैं बचा हुआ हूँ, कि परमेश्वर मुझे बार बार शत्रु के आक्रमण से बचाता है और परमेश्वर दूसरों का उद्धार करने के लिए मेरा इस्तेमाल करता है?" *उद्धार का कर्ण मसीही सिपाही की अपने विचारों और भावनाओं को शत्रुओं के आक्रमण से बचाने और उद्धार के निश्चय को बनाये रखने की योग्यता ह।*

6:17

प्रश्न 7. आत्मा की तलवार क्या है?

ध्यान दें।

शारीरिक युद्ध में, भारीभरकम हथियारों से लैस सैनिक के द्वारा धारित की जाती थी। यह आक्रमण व बचाव दोनों कामों के लिए इस्तेमाल किया जाता है, जिसके द्वारा रोम की बहुत सी लड़ाईयों को जीता गया है।

आत्मिक युद्ध में,तलवार परमेश्वर के वचन को दर्शाती है। इसका अभिप्राय सम्पूर्ण बाइबल से नहीं वरन उस विशेष वचन से है जो आप विशेष परिस्थिति में बोलते हैं। जब परमेश्वर के वचन की घोषणा बाइबल में परमेश्वर के विशेष प्रकाशन से मेल खाता है, तो वह आत्मा की तलवार ठहरता है। आत्मा बाइबल के वचनों को लेकर लोगों के पापों का खुलासा करता है, उन्हें उनके दोषों के प्रति निरूत्तर करता है,सच्चाई के विरूद्ध उनके तर्को का खण्डन करता, उन पर परमेश्वर के वचनों सच्चाई को व्यक्त करता, उनके सन्देहों को दूर करता, उनके डर को भगा देता, शैतान को खदेड़ देता और लोगों को वह मार्ग दिखाता है जिस पर उन्हें चलना चाहिए। मसीही सैनिक के लिए मुख्य प्रश्न यह है कि, "आत्मिक युद्ध में मैं अपने शब्दों का इस्तेमाल कर रहा हूँ या परमेश्वर के वचनों का?" आत्मा की तलवार मसीही सैनिक की वह योग्यता है जिसके द्वारा वह झूठ पर आक्रमण करके विजय को प्राप्त करता है, और परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर के सत्य के प्रति निरूत्तर करता है। उदाहरण के लिए: जब यीशु की शैतान के द्वारा परीक्षा हुई, तो उसने बाइबल से परमेश्वर के वचनों को तीन तार बोला। उसने शैतान की चाल व प्रलोभन पर विजय पाने के लिए आत्मा की तलवार का इस्तेमाल किया। यीशु ने लोगों के प्रश्नों का जवाब देते समय और उन्हें परमेश्वर के राज्य के बारे में बताते समय लगातार परमेश्वर के वचनों का इस्तेमाल किया।

6:18-20

प्रश्न 8. क्या प्रार्थना आत्मिक युद्ध का भाग है?

ध्यान दें। इफिसियों 6 व उसका 17 व 18 पद आपस में जुड़े हैं। मसीही सैनिकों को हर परिस्थिति में आत्मा की तलवार का इस्तेमाल करना व आत्मा में प्रार्थना करना चाहिए। "आत्मा में प्रार्थना" करने का अर्थ है आत्मिक क्षेत्र में प्रार्थना करना, अर्थात, जैसा कि बाइबल में प्रगट है उसकी आत्मा के साथ समन्वय बनाते और उसकी सहायता पर निर्भर होकर प्रार्थना करना। मसीही योद्धा को सब प्रकार की प्रार्थना करनी चाहिए, जैसे सहायता के लिए पुकारना, बुद्धि की मांग करना, ज़रूरतमन्द लोगों के लिए मध्यस्थता करना और प्रार्थना के उत्तर मिलने पर धन्यवाद देना। उसे हमेशा सारे विश्वासियों(सन्तों) के लिए प्रार्थना करनी चाहिए, इसका अर्थ यह प्रार्थना करना है कि परमेश्वर के श्रेष्ठ नियम,उसकी इच्छा ओर उसकी महिमा उनके जीवन अधिकाई से प्रगट हो। मसीही सैनिकों के लिए प्रश्न यह है कि " क्या मैं आत्मिक युद्ध के दौरान दृढ़ता से प्रार्थना में बना हुआ हूँ?" प्रार्थना मसीही सैनिक की वह योग्यता है जिसके द्वारा वह परमेश्वर के साथ सीधा रिश्ता बना सकता है। प्रार्थना के द्वारा, परमेश्वर मसीही की परशानियों को अवसर में बदल सकता है।

कदम 4. उपयोग इस्तेमाल

ध्यान दे: इस अनुच्छेद में प्राप्त सच्चाईयों में से मसीही लोग सम्भवत: किन का इस्तेमाल कर सकते हैं?

बांटे व लेखा रखें: आईये हम इफिसियों 6:10-20 के आधार पर एक दूसरें के साथ विचार विर्मश करें, और जो कार्य सम्भव है उनकी सूचि बनाएं।

ध्यान दें: किस सम्भव सच्चाई विषय में परमेश्वर चाहते हैं कि आप उसे अपने निज जीवन में प्रयोग करें?

लिखें: इस अभ्यास को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। अपने व्यक्तिगत अनुभवों को नि:संकोच दूसरों के साथ बाँटे। (याद रखें कि प्रत्येक समूह भिन्न सत्य का प्रयोग करेगा,और हो सकता है कि वह एक ही सच्चाई को अलग तरीके से इस्तेमाल करें। सम्भावित प्रयोगों की सूची निम्नलिखित है)

1. इफिसियों 6:10-20 से सम्भावित इस्तेमाल की जाने वाली बातों के उदाहरण।

6:10 अपनी मानवीय शक्ति व मानवीय योजनाओं में मजबूत बनने का प्रयास न करें। वरन हमेशा बहुतायत से परमेश्वर की शक्ति व उसकी योजनाओं पर भरोसा करें

6:11 कभी भी एक या दो आत्मिक हथियारों को पहिन आत्मिक युद्ध में न कूद जाएं। वरन परमेश्वर के द्वारा मुहैय्या करवाए गये सारे हथियारों को धारित कर लें।

6:11 मसीही के रूप में बैठें,चलें और खड़े होएं। परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध के सन्दर्भ में बैठें, अर्थात, अपनी धार्मिकता के पद में भरोसे के साथ विश्राम करें, जो आपकों मसीह के साथ स्वर्ग में दिया गया है(इफिसियों 2:6)। इस संसार के लोगों के साथ सम्बन्ध के सन्दर्भ में चले, अर्थात चुने हुए मसीहीयों के समान चाल चलें(इफिसियों 2:210; 4:1.17; 5:2,8,15)। और शैतान और उसकी बुरी शक्तियों के साथ अपने सम्बन्ध के सन्दर्भ में खड़े हो जाएं, अर्थात, उसका सामना करें, उसकी युक्तियों और चालों का खण्डन करें व उसके आक्रमणों का प्रतिरोध करें।

6:12 इस बात को हमशा ध्यान में रखें कि जिस युद्ध में मसीही लोग बुलाए गये हैं वह युद्ध लोगों (मांस और लहू)या सैन्य हथियारों के खिलाफ है । यह लड़ाई हमेशा बुरी आत्माओं, बुरी युक्तियों, दुष्ट प्रभावों और दुष्टात्माओं के आक्रमण व आत्मिक हथियारों से है।

6:13 याद रखें कि बुरे दिन में जब सारी दुष्ट शक्तियां आप पर आक्रमण करेगी,उनके सामने खड़े रहने के लिए आपको परमेश्वर के सम्पूर्ण हथियारों की आवश्यकता पड़ेगी।

6:14 निर्णय लें कि आप इस आत्मिक संघर्ष से भागेंगे नहीं वरन, गम्भीरता व सच्चाई के साथ इस लड़ाई का लड़ेंगे।

6:14 संकल्प करें कि आप अपने आप को शैतानी शक्तियों के सामने बिना सुरक्षा कवच के नहीं जाएंगे,वरन हमेशा एक नैतिक व धार्मिक जीवन व्यतीत करेगें जिससे की आप शैतान के खिलाफ युद्ध में खड़े हो सकें।

6:15 संकल्प करें कि बुरी शक्तियां आपको कभी भी सुरक्षा कवच के बिना नहीं पाएंगी, परन्तु आप सुसमाचार की सहायता से बने एक पूर्ण व्यक्ति के समान जीवन व्यतीत करें ताकि आप पूरी तरह से आत्मिक लड़ाई लड़ने के लिए तैयार हों।

6:16 संकल्प करें कि आप दुष्ट की शक्तियों के आक्रमण के विरूद्ध उदासीन नहीं बने रहेंगे, बल्कि परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करेंगे और उसी के अनुसार काम करेंगे, ताकि आप अपने आप की सुरक्षा कर सकें, जय पा सकें और आत्मिक लड़ाई में विजय प्राप्त कर सकें।

6:17 संकल्प करें कि बुरी शक्तियां आपके विचारों और आपकी भावनाओं को बिना सुरक्षा के न पाएं, वरन अपने विचारों और भावनाओं सत्य से भर दें ताकि परमेश्वर आपको जीवन की बहुत सी कठिनाईयों व सताव से बचा सकें और अन्त में हमेशा के लिए अपनी उपस्थिति से सुरक्षित रखे।

6:17 संकल्प करें कि आप बुरी शक्तियों के आक्रमण के विरूद्ध उदासीन नहीं बने रहेंगे, बल्कि बुरे विचारों और बुरे कामों पर आक्रमण करने के लिए बाइबल के वचनों का इस्तेमाल करेंगे ताकि आप आत्मिक लड़ाई के मैदान में शैतान की चाल व युक्तियों पर विजय प्राप्त कर सकें।

6:16-18 सकल्प करें कि आप बुरी शक्तियों के आक्रमण से नहीं डरना चाहते, वरन आप बाइबल में आत्मा द्वारा प्रगट किये गये प्रकाशन के आधार पर प्रार्थना करना चाहते हैं ताकि आत्मिक लड़ाई के दौरान आपका सीधा समबन्ध परमेश्वर से बना रहे। परमेश्वर आपकी आत्मिक लड़ाई को आत्मिक अवसर में बदल सकता है।

2. इफिसियों 6:10-20 से आत्मिक व्यवहारों के उदाहरण।

मैं सत्य का पटुका बांधना चाहता हूँ। मैं कठिन परिस्थितियों से भागना बन्द करना चाहता और सच्चाई से आत्मिक लड़ाई में शामिल होना चाहता हूँ। इस समर्पण के साथ, मैं ज्यादातर प्रार्थना करूंगा कि परमेश्वर मेरे भय को दूर करेगा और मुझे गिदोन के समान साहसी और निडर बनाएगा।

जब कभी बुरी शक्तियां मेरे विचारों व भावनाओं पर आक्रमण करती है मैं विश्वास की ढाल का इस्तेमाल करना चाहता हूँ। जब शक,सन्देह,डर, वेदना, लालच, व्यर्थता, डाह या अभिलाषा आदि के अग्निमय तीर मुझ पर फेकें जाते हैं,तो मैं इन विचारों और भावनाओं के खिलाफ विश्वास से काम करना चाहता हूँ। सक्रिय विश्वास के द्वारा मैं शैतान और उसकी चालों को सामना करना चाहता हूँ।

कदम 5. प्रार्थना प्रतिउत्तर

आइये हम उन सच्चाईयों के लिए प्रार्थना करें जो परमेश्वर ने हमें इफिसियों 6:10-20 में सिखाई हैं।

(जिन बातों को आपने अपने अध्ययन के दौरान सीखा उनका प्रार्थना के द्वारा प्रतिउत्तर दें। एक या दो वाक्यों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। याद रखें कि लोग अलग अलग समूहों में अलग मुद्दों पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	*[प्रतिक्रियाएं]* **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन के समूह में होकर **प्रार्थना करते रहें।** एक दूसरे तथा संसार के सभी लोगों के लिए प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ इफिसियों 6:10-20 के आधार पर प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: एस्तेर 2,3,4 व 5 अध्याय के बीच में से प्रतिदिन आधा अध्याय पढ़कर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। पसन्दीदा सच्चाई के तरीकों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. याद करें। सेवा: मरकुस 10:45। रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।
4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।